IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर प्रदेश में संचालित निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन

अनुराग मिश्रा
(शोध छात्र)
एम.एड, एम.एस.सी. (जूलोजी)
शोध निर्देषक
डॉ0 हलधर यादव

सरांश – प्रस्तुत अध्ययन में ''उत्तर प्रदेश में संचालित निजी एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

प्रस्तावना– मनुष्य के सर्वांगीण विकास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा एक ऐसा साधन है। जो मनुष्य को प्राणी जगत में अन्य जीवों से अलग करती है। शिक्षा मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी बनाकर उसके सर्वांगीण विकास की बात करती है। किसी भी बालक के पालन–पोषण की जिम्मेदारी प्रथम दृश्या परिवार की होती है। परन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता है, उसे परिवार के अन्य सदस्य उठना–बैठना, चलना–बोलना आदि सारी चीजे सीखते हैं। जब बच्चा तीन से चार वर्ष का होता है उसके शैक्षिक जीवन में विद्यालय की भूमिका अहम होने लगती है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। यह भौतिक और मानवीय विकास पर बल देता हैं।

वर्तमान समय मे यदि एक विद्यालय को स्थापना करनी है तो उसके लिये स्थान, वातावरण, जल, भवन, फर्नीचर, शैक्षिक साज–सज्जा, शिक्षक एवं अन्य कर्मचारियों आदि का प्रबन्ध करना होगा। शिक्षा के चरित्र निर्माण के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये इन तत्वो को सुव्यवस्थित करना होगा। शिक्षा के चरित्र निर्माण के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमे विद्यालय में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं नैतिक वातावरण, सामाजिक क्रियाओं आदि का संगठन इस प्रकार करना होगा, जिससे बालकों का चरित्र निर्माण उचित दिशा में हो सकें। उपयुक्त वातावरण निर्मित करने के लिए हमें योग्य एवं चरित्रवान शिक्षकों की नियुक्ति करनी होगी। विद्यालय संगठन वह संरचना है जिसमें शिक्षक, छात्र, प्रधानाध्यापक, परिनिरिक्षक तथा अन्य व्यक्ति विद्यालय की क्रियाओं को चलाने के लिए मिलकर कार्य करते हैं। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समस्त उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय तत्वों की समुचित व्यवस्था करना विद्यालय का संगठन कहलाता हैं।

संगठन के अन्दर केवल व्यवस्था ही नही वरन विभिन्न विद्यालयों तत्वो में सामजस्य या समन्वय स्थापित करना भी अनिवार्य हैं। सभी आवश्यक तत्वों का प्रबन्ध करके उसमें इस प्रकार समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए जिससे

निर्धारित लक्ष्यों प्राप्ति के लिए प्रत्येक तत्व का अधिकतम उपयोग कम से कम विघ्न एवं बाँधा के अभाव में किया जा सके।

यदि विभिन्न वस्तुओं के प्रयोग एवं उनके कार्यो में उचित समन्वय का अभाव है तो विद्यालय का कार्य सुचारू रूप से संचालित नही होगा। विद्यालय में पुस्तको , पुस्तकालयाध्यक्ष एवं भवन आदि सभी का प्रबन्ध रहता है परन्तु यदि पुस्तको का उचित प्रकार से वर्गाकरण नही दिया गया है। और विद्यालय की समय तालिका में छात्रों को पुस्ताकालय से पुस्तक प्राप्त करने के लिए विशेष समय नही दिया गया है। अथवा बहुत वड़ी संख्या में छात्र उक ही समय में पुस्तके पढ़ने व लेने हेतु पुस्तकालय में एकत्रित हो अथवा पुस्तकालाध्यक्ष का इस कार्य के लिए नियत समय छात्रों की सुविधा के समय से भिन्न हो तो विद्यालय में पुस्तकालय सम्बन्धित समस्त सुविधाओं एवे व्यवस्था होते हुए भी समन्वय के अभाव में पुस्तकालय का अधिकतम लाभ छात्रों को नही मिल पायेगा। संगठन के अर्थ को समझने से स्पष्ट हो जाता है कि संगठन को ही लक्ष्य न बनाया जायें। विद्यालय संगठन को तो एक ऐसे साधन के रूप में ग्रहण चाहिए कि अभिष्ट शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है। इसको स्वंय में साध्य बनने की अनुमति नही दी जानी चाहिए, वरन् इसको सदैव उस लक्ष्य के अधीन रखा जाना चाहिए, जिसकी प्राप्ति के लिए नियोजन किया जा रहा हैं।

वर्तमान में जहाँ सरकारी विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था किसी से छिपी नही हैं। सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा केवल अपने शिक्षण कार्यो से मतलब एवं अपने समय सीमा तक ही स्कूलो में समय दिया जाना साथ ही विद्यालय में आने वाले विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान नही दिया जाता है। वही विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण पर भी विशेष ध्यान न देने के कारण सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या में लगातार गिरावट देखी जा सकती है। और अभिभावको द्वारा आपने बच्चों को निजी एवं पब्लिक विद्यालयों में भेजने का दृष्टिकोण में वृद्धि हुई हो वही निजी एवं गैर सरकारी– विद्यालयों में पैसा कमाने की होड़ में विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि, विद्यार्थियों के उच्च एवं सुविधाजनक वातावरण, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, शौचालय एवं प्रधानाचार्य के नेतृत्वशीलता एवं शिक्षकों के साथ अच्छे व्यवहार के साथ–साथ विद्यार्थियों के साथ–अच्छा व्यवहार तथा विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पूर्व अध्ययन में शर्मा, रंजना (2013) ने शिक्षण संख्या की गतिविधियों में प्रबन्धन शैलिया प्रभावित करती हैं। अध्ययन में नौ प्रकार के द्वि–ध्रवीय प्रबन्धन शैलियों को चिन्हित किया जिसमें उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त अहस्तक्षेप प्रधान, सहभागिता युक्त बनाम सहभागिता मुक्ति, व्यक्ति उन्मुख बनाम समूह उन्मुख अभिप्रेरणा बनाम गैर अन्तः क्रियात्मक तथा केन्द्रीकृत बनाम विकेन्द्रीकृत प्रबन्ध शैलियों विद्यालय के प्रबन्धन में उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। रजाः सैइयद अहमद (2010) ने अध्ययन के निष्कर्षों में पाया गया कि पब्लिक कालेजो के प्रचार्य के खूले विचार आदर, शिक्षकों के मध्य आपसी व्यवहार प्राचार्य से सीधा सुरक्षात्मक व्यवहार का शिक्षकों के प्रदर्शन के मध्य सार्थक एवं सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया।

भट्ट एम0एस0 एवं मीर, एस0एस0 (2018) ने अध्ययन के निष्कर्षों में पाया गया कि– निजी विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया। अग्रवाल, श्वेता (2019) ने अध्ययन के निष्कर्षों में पाया कि– उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालयों के कुल संगठनात्मक वातावरण एवं इसके विविध परिणाम, पुरूस्कार व्यवस्था अन्तः व्यक्ति सम्बन्ध , सूचनाओं का अदान–प्रदान बालक विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया जबकि

संगठनात्मक वातावरण के आयाम परोपकारी दोनो प्रकार के विद्यालयों में समानता पायी गई।

हम देश के ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों पर नजर डालें जहाँ अब कम फीस लेने वाले कई निजी स्कूल खुल गए हैं और जिनमें दो–तिहाई से ज्यादा बच्चे पढ़ते हैं। इस सदी की शुरुआत से ही भारत में प्राथमिक स्कूलों में नामांकन के आँकड़ों में वृद्धि के साथ–साथ निजी स्कूलों के नामांकन में भी बहुत ज्यादा और लगातार वृद्धि हुई है। यह आँकड़ा शहरी क्षेत्रों में हमेशा से ही उच्च था, एनुअल स्टेटस आफ एजुकेशन रिपोर्ट (ASER) 2014 के नवीनतम आकलनों से यह संकेत मिलता है कि ग्रामीण प्राथमिक कक्षाओं के प्रति दस बच्चों में से तीन से अधिक बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ते हैं। बच्चे किसी भी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के क्यों न हों, इस बात की माँग बढ़ती जा रही है कि निजी स्कूलों में उनके अभिगम को बढ़ाया जाए। निजी स्कूलों की इस बढ़ती लोकप्रियता से यह चिन्ता भी पैदा हो रही है कि सामान्य रूप से समाज में और विशेष रूप से स्कूलों में आर्थिक और सामाजिक स्तरीकरण और न बढ़ जाए। कई लोगों का मानना है कि फीस लेने वाले निजी स्कूलों की इस बढ़ती लोकप्रियता का कारण यह है कि माता–पिता सरकारी स्कूलों से असन्तुष्ट हैं। आँख मूँदकर यह बात मान ली जाती है कि निजी स्कूल बेहतर हैं। यह धारणा कितनी सच है?

निजी स्कूलों के समर्थकों का एक प्रमुख तर्क इस तथ्य पर आधारित है कि निजी स्कूलों में बच्चों की अधिगम–उपलब्धि बेहतर है। अपने दावे को साबित करने के लिए वे स्कूल की परीक्षाओं में प्राप्त अंकों के व्यापक आँकड़े दर्शाते हैं। चूँकि विभिन्न स्कूलों की परीक्षाएँ अलग होती हैं और दो प्रकार के स्कूलों से प्राप्त आँकड़ों की तुलना नहीं की जा सकती। इसलिए इस तर्क के जवाब में ऐसी परीक्षाओं के परिणाम देखे जाते हैं जो दो प्रकार के स्कूलों में एक साथ तथा एक सामान्य आकलन प्रश्न पत्र देकर ली गई हों और उसमें भी निजी स्कूलों के बच्चे सरकारी स्कूलों के बच्चों को मात देते से प्रतीत होते हैं। यही उनका 'ठोस सबूत' है। इस तरह की सोच की एक गम्भीर सीमा है। सरकारी स्कूल के बच्चों की तुलना में निजी स्कूल के बच्चों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि काफी अलग होती है। इसलिए यह तुलना बहुत असमान है और इनकी तुलना करना ऐसा ही है जैसे सेब और सन्तरे की तुलना करना। अगर निष्पक्ष रूप से तुलना करनी है तो यह जरूरी है कि समान पृष्ठभूमि वाले निजी और सरकारी स्कूलों के बच्चों का आकलन सामान्य उपकरणों या साधनों का उपयोग करते हुए एक साथ किया जाए।

निष्कर्ष :–

वर्तमान समय में उ0प्र0 में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों का संचालन सरकारी एवं निजी संस्थानों द्वारा

किया जा रहा है। और किसी भी बच्चें का सर्वांगीण जीवन उसके वर्तमान के अनुभव एवं अध्ययन पर निर्भर करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में साफ–साफ कहा गया है कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति का कानूनन अधिकार है जिसे किसी भी प्रकार से वंचित नही किया जा सकता हैं।

वर्तमान समय में शिक्षा की व्यवस्था को देखने पर यही पता चलता है कि शिक्षा का सर्वांगीण विकास बच्चे को एकांकी विकास की तरफ ले जा रही है जैसे सरकारी विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करने पर पता चलता है कि वहाँ के बच्चो का हिन्दी विषय पर अत्यधिक पकड़ होती है। जबकि अंग्रजी विषय पर उतनी पकड़ नहीं होती जितनी की निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की होती है। उसी प्रकार निजी विद्यालयों के बच्चों की बात करें तो उन्हें अंग्रजी विषय पर अच्छी पकड़ होती है, परन्तु हिन्दी विषय पर कहीं न कहीं कमजोर साबित होते हैं। जबकि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था बालकों के सर्वांगीण विकास की बात करता है। जो वर्तमान एवं भविष्य के लिए अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–:

त्रिवेदी, वीणा (2016) – शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका अंक 10(02) पृष्ठ 64–66

शुक्ला, संजीव कुमार (2016) – शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका अंक 10(02) पृष्ठ संख्या 95–97

चन्द्र, विपिन (2009) – भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन शिक्षा के परिपेक्ष में अनामिका पटिल सर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 10–11

सुखिया, एस.पी. तथा अन्य (1991)– शैक्षिक अनुशन्धान के मूल तत्व, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर

अग्रवाल, श्वेता (2015) – उच्य मध्यमिक बालक एवं बालिकाओं के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षको की शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन जनरल

ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, वा0 6, न0 2, पृष्ठ संख्या 270–275

भट्ट, एम0एस0 एण्ड मीर,(2018) – परिसिप्ड स्कूल क्लाइमेट एण्ड एकेडमिक अच्युमेन्ट ऑफ सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू देयर जेन्डर टाइप ऑफ स्कूल, इण्टर नेशनल जनरल ऑफ एण्डवांस वा0 3 इश्शू–2 पृश्ठ संख्या 620–628

वार्नर आर० बी०. – स्टूडेंट्स सैटिस्फेक्सन/डिससैटिस्फेक्सन एन्ड देअर रिलेशनशिप टू टीचर एन्ड एडमिनिस्ट्रेशन.परसेप्सन ऑफ दीज डिजर्टेषन एब्स्ट्रैक्ट इंटरनेशनल (ए), 1975 : 36 : 5–6, पी. 2564.

सुजाता,के0,श्रीनिवास राव,(2006)– माध्यमिक शिक्षा आन्ध्रप्रदेश में स्कूलो का वितरण तन्त्र और काम काजः केस स्टडी नई दिल्ली एन0आई0ई0पी0ए0

सुजाता, के0, सुमन (2006) – माध्यमिक शिक्षा महाराष्ट्र में स्कूलो का वितरण तन्त्र और काम–काजः केस स्टडी नई दिल्ली

सुजाता, सेरेन्डेंदु (2006) – माध्यमिक शिक्षा उ0प्र0 में स्कूलो का वितरण तन्त्र और काम–काजः केस स्टडी नई दिल्ली एन0आई0ई0पी0ए0

विश्वाल, बंगला पी0 (1999) – निजी टयूशन और सार्वजनिक भष्टाचार विकासशील दशो लिए एक लागत प्रभावी

शिक्षा विकासशील अर्थ व्यवस्थाए 37,

2 पी0पी0 222—240